शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

समाज में परिवर्तन इमानदारी से जीवन मूल्यों को अपनाकर ही लाजा जा सकता है।

डॉ० ममता शर्मा
प्रवक्ता, संस्कृत विभाग,
डी०ए-वी०, कॉलेज,
कानपुर

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

महाकवि कालिदास के नाटकों में पर्यावरण संचेतना

– डॉ० ममता शर्मा

महाकवि कालीदास के नाटकों में पर्यावरण संचेतना
लेखक : डॉ० शीनुल इस्लाम मलिक
प्रकाशक : विश्व पुस्तक प्रकाशन
३०४-ए, बी०/जी०-6,
पश्चिम विहार
नई दिल्ली-63, भारत
पृष्ठ : 261
मूल्य : 300/-
ISBN: 978-81-89092-13-9

पर्यावरण शब्द का तात्पर्य है– हमारे चारों ओर का आवरण। इसके अन्तर्गत पंचमहाभूत आते हैं। पर्यावरण का संतुलन इसमें विद्यमान पंचमहाभूतों के सन्तुलन पर निर्भर करता है। इनके समुचित समन्वय है। प्राच्य कवि मनीषी पर्यावरण संरक्षण के इस तत्व को बड़े ही सूक्ष्म एवं बारीकी से समझते थे। उन्हें प्रकृति एवं प्राणियों के मध्य विद्यमान अन्तर्सम्बन्धों का स्पष्ट ज्ञान था, इसीलिए उन्होंने प्रकृति के विविध परिदृश्यों का शब्दों के माध्यम से चित्रांकित किया है। भारतीय चिन्तन में जीवन को मूर्त्त एवं अमूर्त्त रूप में पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, अग्नि, सूर्य, चन्द्र, नदी, वृक्ष, वनस्पति, पशु-पक्षी आदि के साहचर्य एवं सहयोग के रूप में देखा गया है। मनुष्य प्रकृति का सम्मान करता था, उससे मैत्रीपूर्ण व्यवहार करता था। अतः प्रकृति भी मनुष्य से प्रेमपूर्ण व्यवहार करती थी। भारतीय संस्कृति प्रकृति और मनुष्य के आत्मीय एवं अटूट सम्बन्धें पर ही आश्रित रही है। परन्तु आज मनुष्य अपने स्वार्थ के वशीभूत होकर प्रकृति की उपेक्षा ही नहीं कर रहा है, अपितु दोहन कर रहा है। अतः पर्यावरण संरक्षण आज सम्पूर्ण विश्व के लिए एक ज्वलन्त समस्या बन गयी है।

'महाकवि कालिदास के नाटकों में पर्यावरण संचेतना' प्रकाशित शोध-प्रबन्ध में डॉ0 शीनुल ने पर्यावरण समस्या के समाधान हेतु संस्कृति-वाङ्गमय को अपने शोध का विषय बनाया, यह निश्चित ही एक सराहनीय प्रयास है। यह उनकी अनुसंधानात्मक प्रवृत्ति एवं सत्यान्वेषणात्मक आग्रह का प्रकटीकरण है। सत्य का अनुसंधान केवल यथार्थ चिन्तन एवं विगत पूर्वाग्रह से ही सम्भव है। महाकवि कालिदास के नाटकों में मनुष्य और प्रकृति का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध दृष्टिगोचर होता है। उन्होंने प्रकृति का मानवीकरण करके मानव और प्रकृति दोनों की अद्भुत एकरसता दिखाकर प्रकृति के भीतर स्फुरित होने वाले हृदय एवं भावों को उद्घाटित किया है। प्रकृति के प्रति उनकी यह संचेतना 'ईशावास्यमिदंसर्वम्' का ही प्रतीक है। अतः जो कुछ भी इस जगत में है, उसमें परमेश्वर व्याप्त है, उसका त्यागपूर्वक भोग कर, लोभ न कर। यही निर्देश मनुष्य को दिया गया है। वेदमंत्रों की यह भावना मानव की विकृतियों को भी अनुशासित करती है और यही आधार है आध्यात्मिक, धार्मिक, दार्शनिक, सांस्कृतिक, नैतिक एवं राजनैतिक पर्यावरण संचेतना का।

डॉ0 शीनुल ने प्राकृतिक पर्यावरण के साथ ही मानव निर्मित पर्यावरण के विविध पक्षों को भी शोध का विषय बनाया है, यह आधुनिक परिप्रेक्ष्य नाटकों को ही पर्यावरणीय चिन्तन का आधार बनाया है, जबकि महाकवि के सभी महाकाव्य, खण्डकाव्य पर्यावरण संचेतना से ओत प्रोत हैं। अतः मेरा सुझाव है कि भविष्य में महाकवि के सम्पूर्ण काव्य में पर्यावरणीय चिन्तन की समीक्षा हो।